International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 16-03-2026, Accepted: 16-04-2026, Published: 01-05-2026
Volume 8, Issue 2, 2026, Page No. 24-26

हिंदी कहानी में पुरुष विमर्श: एक परिचय

आतिश कुमार विश्वकर्मा
शोधार्थी, हिंदी विभाग, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालडी, केरल, भारत

सारांश
जैसा की विदित है कि कहानियां ज्यादातर पुरुष पात्र को केंद्र में रखकर ही लिखी जाती है। उसमें निहित पुरुष का व्यक्तित्व अच्छा–बुरा दोनों होता है। ज्यादातर देख सकते हैं कि पुरुष पात्र शोषण करने वाला ही चित्रित होता है। और यह कहीं–न–कहीं समाज में चल रहे गतिविधियों की ही देन है। इसे झुठलाना संगीन होगा। माना कि इस पुरुष प्रधान और पितृसत्तात्मक समाज में पत्नी के रूप में स्त्री प्रताड़ित हुई है, पर मैं मानता हूं कि हमेशा पति ही गलत नहीं होता। गलत पत्नी भी हो सकती है। पुरुष जितनी भी भूमिका निभाता है और जिसमें वह प्रताड़ित होता है, समाज में कहीं न कहीं वह पक्ष छिप जाता है। हालांकि साहित्य और समाज का परस्पर संबंध है, परंतु जब अन्य विमर्शों पर खुल कर बातें होती है तब वहां पुरुष विमर्श उपेक्षित रहता है। इसका कारण यह भी है कि विविध विमर्शों को लेकर बुनियादी दस्तावेज उपलब्ध नहीं है। हिंदी में तो प्रामाणिक दस्तावेज तो अभी तक मेरे संज्ञान में नहीं आया है। हिंदी की कुछ ऐसी कहानियां हैं जैसे – श्याम सखा श्याम की 'कत्ल', शैलेंद्र नाथ कौल की 'निमंत्रण', सुदर्शन प्रियदर्शिनी की 'आचार – संहिता' विजय उपाध्याय की 'फैसला' आदि, जिनमें पतियों को पीड़ित दिखाया गया है। इस शोध प्रपत्र में इन्हीं कहानियों के माध्यम से पुरुष विमर्श का परिचयात्मक अध्ययन है।

मूल शब्दः व्यवस्था, पुरुष पीड़ा, दस्तावेज, रीति–रिवाज, उपेक्षित

अभी कुछ सालों से 'पुरुष विमर्श' जैसा शब्द हिंदी साहित्य में प्रखर हो रहा। हालांकि इसपर हल्की–फुल्की बातें और बहस होती है। शोधकार्य के रूप में भी बस गिने चुने ही दस्तावेज मिले हैं। विमर्शों की अवधारणा को लेकर कोई बुनियादी ग्रंथ या दस्तावेज उपलब्ध नहीं है। अगर है भी तो अभी तक मेरे संज्ञान में नहीं आई। हालांकि विविध विमर्श की जब बात हम करते हैं तो पुरुष विमर्श हमेशा उपेक्षित ही रहा है। पुरुषों पर जब बातें होती है तो अन्य विमर्शों के अवधारणाओं के दृष्टिकोण से ही होती है। सबसे पहले तो ये होता है कि पुरुषों को एक शोषक के रूप में ही दिखाया जाता है। साहित्य में यह बात आम है, क्योंकि यह सही भी है। इसमें कोई दोहराई नहीं है। परंतु ऐसा क्यों हुआ कि उस पक्ष को नजरंदाज किया गया जिसकी आवश्यकता अधिक थी समाज में बदलाव लाने के लिए? साहित्यकार हो या समाजशास्त्री इन्होंने 'पुरुष भी पीड़ित है' इस बात को दबा कर क्यों रखा? इसका कारण जहां तक मैं समझता हूं वह यह है कि साहित्यकार एक ऐसे विमर्श पर स्वयं को केंद्रित कर दिए, जहां सिर्फ एक वर्ग को पुरुष के विरोध में खड़ा कर दिया और सिर्फ यही बताया गया कि आपके यानी स्त्रियों के पीड़ित होने व स्त्रियों के विकास न होने के पीछे सिर्फ पुरुष वर्ग ही है। परंतु साहित्य और समाज में हम देखते हैं कि किसी स्त्री को सिर्फ अकेले पुरुष ही प्रताड़ित नहीं करता वरन उसके पीछे उनके ही वर्ग के लोग होते हैं, और इस बात को ज्यादातर नजरंदाज किया जाता है। "स्पष्ट है कि पीड़ा और प्रताड़ना पहले एक सत्य है, जो अपने मूल रूप में विमर्श नहीं है। पहले वह समस्या है, मुद्दा है, बाद में विमर्श उसमें ढूंढा जाता है। यह कहना ज़रूरी है कि सारे विमशों की कहानियां वास्तव में दुःख, तकलीफ और पीड़ा की कहानियां हैं जिनके केन्द्र में हैं समाज के सताये हुए पात्र। दुर्भाग्य वश यह मान लिया गया है कि पूरा पुरुष वर्ग पीड़क के रूप में ही अब तक सामने आया है, पीड़ित के रूप में नहीं। साहित्य की दुनिया में अब तक यही हुआ है।"[1]

अब प्रश्न यह उठता है कि पुरुष की यह दशा क्यों है? उत्तर है सामाजिक ढांचा जिसमें खोखली और बे–बुनियादी तत्व शामिल है। ये तत्व पुरुष के अंदर बचपन से कूट–कूट कर डाली जाती है। रोने न देना, और यह कहना कि लड़कों को रोना नहीं चाहिए क्योंकि रोना सिर्फ लड़कियों का काम है। बचपन से ही पुरुष को मर्द बनाने में समाज लगा रहता है। मर्द कहने मात्र से ही बलशाली होने का गौरव प्राप्त हो जाता है। खिलौने लेने में बन्दूक, कपड़ों के रंग में भूरा, काला, गाढ़ा नीला शामिल कर देते हैं। गुड़ियों से खेलना, गुलाबी कपड़े पहनना, मेकअप करना यानी मर्द न होने का ठप्पा लग जाता है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था में पुरुष अपने वर्चस्व वादी विचारों से बाहर क्यों नहीं निकलता? कारण है असंतुलन एवं असामंजस्य जो समाज पैदा करता है। समाज दिन–प्रतिदिन इस विचारधारा को रूढ़ बनाते चला जाता है। ये भी सच है कि पुरुष अपनी खोखली विचारधारा का डांवांडोल प्रदर्शन करता है। अगला प्रश्न यह भी उठता है कि क्या पितृसत्तात्मक व्यवस्था बनाने में सिर्फ पुरुषों का हाथ है? उत्तर है नहीं, जितना पुरुषों का योगदान रहा है उससे अधिक स्त्रियों का भी रहा है। यह एक कड़वा तथ्य है परन्तु सच्चाई यही है। स्त्रियों ने भी पितृसत्तात्मक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए पुरुष के अन्दर स्त्री को जगाने का कार्य नहीं किया।

पुरुष– विमर्श को नई दृष्टी प्रदान करने की जरूरत है, जहाँ पर पुरुष मन के भीतर की दुनिया को उजागर करना प्राथमिकता हो। अन्यथा यह विमर्श भी अन्य विमर्शों की भाँती अपने पथ से भटक सकता है। पुरुष–विमर्श को सही मायने में कुछ सवालों का जवाब देकर आगे बढ़ने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में सुधा अरोड़ा का मंतव्य है कि, "पुरुष–विमर्श के उद्भावकों को इस पर विचार कर लेना चाहिए कि स्त्री–विमर्श, स्त्री की ऐतिहासिक रूप से चली आ रही राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक पराधीनता से पैदा होता है। इसके बरक्स पुरुष–विमर्श के भौतिक और दार्शनिक आधार क्या हैं उसके ऐतिहासिक साक्ष्य कहाँ मिलते हैं? और उसके दायरे में किस प्रकार के पुरुष हैं? इन कुछ ज़रूरी सवालों का जवाब देने के बाद ही वे अपनी उद्भावना को विमर्श का जामा पहना सकेंगे।"[2] इस प्रक्रिया में एक लंबा समय लग सकता है। ज्यादा से ज्यादा साहित्यिक लेखन और विचारों को एक व्यवस्थित ढांचें में रखकर ही इसे एक दिशा दी जा सकती है।

हिंदी में कुछ ऐसी कहानियां लिखी गई है जिसमें पुरुष एक पति के रूप में पीड़ित दिखाया गया है। आज तक हम सिर्फ "पुरुष

पति के रूप में पीड़ा देने वाला" है ऐसी कहानियों से परिचित हुए परंतु कुछ ऐसी कहानियां भी मिली जो इस कथन से विपरीत है। ऐसी ही एक कहानी है श्याम सखा श्याम की 'कत्ल'। इसमें एक ऐसे पति नाम है डॉ. रामअवतार जो 68 वर्ष का पेशे से एक नामी और इज्जतदार डॉक्टर है का चित्रण है। उसकी पत्नी प्रेमा है, दो बेटे और एक बेटी। सभी अपने–अपने शादीशुदा जिंदगी में खुश हैं। डॉ. रामअवतार को अपनी पत्नी की हत्या के जुर्म में गिरफ्तार कर लिया जाता है। और गिरफ्तारी वह स्वयं करवाता है। परंतु उसके एक परम मित्र और बच्चे अपने पिता को बचाने की कोशिश करते हैं। परंतु कोर्ट में वह अपना जुर्म कबूल कर लेता है। अपने मित्र को कहता है "मुझे डर था कि मेरे बच्चे मुझे फाँसी से बचाने के लिए या तू भी मनोचिकित्सक पर दबाव डालकर मेरी मनोदशा को विक्षिप्त घोषित करवा दोगे। उस वजह से मुझे पागलखाने में भी रहना पड़ता। वहां प्रेमा की आँखें मुझे घूरती रहती और वह उठाकर हँसती।"[2] डॉ. रामअवतार अपनी पत्नी से तंग आ चुका था। उसकी पत्नी प्रेमा शादी के पहले दिन से ही अपनी माँ के बहकावे में थी। जैसा उसकी माँ कहती वैसा वह अपने घर पर करती और ये सब चीजें समस्त परिवार को प्रभावित करता है, खासकर डॉ. रामअवतार को। कोर्ट में जज को डॉ. रामअवतार सबकुछ बता देता है। परंतु अगली सुनवाई से एक दिन पहले जेल में डॉ. रामअवतार आत्महत्या कर लेता है। फैसला देते वक्त जज को प्रेमा के पोस्टमार्टम के रिपोर्ट से पता चलता है कि प्रेमा की मौत तकिए से मुंह को दबाने से नहीं परंतु ह्रदय की गति रुकने से हुई थी। अपनी पत्नी से इस तरह तंग हुआ एक पति एक कुशल डॉक्टर जो अपनी पत्नी के ह्रदय गति के कारण हुई मौत को स्वयं कत्ल करने वाला बोलकर जेल चला गया और वहां जब उसे एहसास हुआ कि वह बच जाएगा तो उसने आत्महत्या कर ली। जेल में उसे खुशी मिल रही थी। परन्तु वह जिन्दा रहना नहीं चाह रहा था।

शैलेंद्र नाथ कौल की कहानी 'निमंत्रण' ऐसे दो मित्रों विकास उर्फ़ विक्की और संतोष उर्फ़ संतू की है जो बचपन के मित्र हैं। दोनों दिल्ली में काम करते हैं। विकास पहले से ही दिल्ली में है परन्तु संतोष का हाल ही में तबादला हुआ है। दोनों वर्षों बाद अचानक दिल्ली के एक मेट्रो स्टेशन पर मिलते हैं। विकास गंभीर है परन्तु संतोष मस्त मौला और हंसी ठिठोली करने वाला है। विकास की पत्नी नंदिनी विकास के पिता को घर के बालकनी में पी. वी. सी. की चादरों से बने 10 बाई 5 में रखती है। हालाँकि एक कमरा खाली होता है जिसे नंदिनी अतिथियों के लिए रखती है। विकास ने जब इस चीज़ का विरोध किया और कहा "वह मेरे पिता हैं जिन्होंने मुझे पढ़ाया लिखाया और इस योग्य बनाया कि मैं सुख से रह सकूँ। किस योग्य बनाया कि चार कमरों का घर भी नहीं ले सकते, नंदिनी ने कटाक्ष मारा।"[4] विकास बेबस है वह घर में कलह नहीं चाहता इसीलिए वह सबकुछ सहता है। यहाँ यह साफ़ दिख रहा है कि मेहनत से तीन कमरों का घर लेने पर भी विकास की पत्नी उसे अयोग्य कहती है। दूसरी तरफ संतोष का भी कुछ यही हाल है। संतोष भी अपनी पत्नी से परेशान है। परन्तु वह खुश मिजाज है। एक दिन जब दोनों मित्र पुनः मिलते हैं तो पता चला कि दोनों एक ही नाव पर सवार हैं। विकास के ये कहने पर कि संतोष तुम्हारा भी यही हाल है तो संतोष कहता है "हाँ, मैं भी उसी तरह जिह्वया रूपी तलवार के जख्मों से घायल होता रहता हूँ। अभी अपने देश में, अपवादों को झोड़ कर स्त्री इतनी शक्तिशाली नहीं हुई है कि शरीर को जखम दे सके इसलिए सिर्फ मन ही घायल होता है। मैंने वह ब्लॉग का पेज जो तुम्हें दिखाया था वह मैंने ही लिखा है और तुम से झूठ बोला था कि मंजरी को दिखाने के लिए प्रिन्ट लिया है।"[5] संतोष विकास को समझाता है कि वही सिर्फ अकेला नहीं है और भी कई लोग हैं। संतोष विकास को हँसते रहने का मशवरा देता है और अपने दुःख–दर्द को साझा करने के लिए कहता है। संतोष विकास से कहता है "मेरा ज़्यादा हंसना एक बीमारी है यह मैं जानता हूँ। तुम भी बीमार हो गए हो और एक खामोश, अंधेरी सुरंग में घुसते जा रहे हो। तुम्हारी बीमारी मेरी बीमारी से ज़्यादा घातक हो सकती है अगर समय पर इलाज नहीं किया गया। वैसे इलाज है भी नहीं सिवा इसके कि हम शेयर करें अपने मन के बोझ को बिना किसी को चोट पहुँचाए।"[6] विकास अब समझ चुका था। "विकास को लगा कि व्यर्थ ही वह नंदिनी के आगे कमजोर पड़ रहा था। संतोष एक ऐसी महक की लहर है जो उसे सुरंग के अंधेरों से बाहर आने का निमंत्रण दे रही है।"[7] विकास और संतोष समझ चुके कि उनके जीवन में ये सब यूहीं चलता रहेगा, इससे अच्छा है कि समय निकाल कर दो पल हंस लिया जाए।

विजय उपाध्याय की कहानी 'फैसला' में मिस्टर मल्होत्रा का अपनी पत्नी द्वारा मिले धोखे से वे स्त्रियों को नापंसद करने लगा। बेटी रिया जब एक साल की थी तो उसकी माँ उसे छोड़कर अपने प्रेमी के साथ चली गई। मल्होत्रा ने अपनी बेटी का पालन–पोषण किया। मल्होत्रा ने तलाक न देने और दूसरी शादी न करने का फैसला कर लिया था। वर्षों बाद जब रिया की माँ ने मल्होत्रा को सुनाया कि, "जिसे तुम पाल रहे हो वो मेरी बेटी तो है मगर आप की नहीं.....समझे मि. मल्होत्रा..... भाड़ में जाओ तुम और तुम्हारा तलाक।"[8] रिया उनकी बेटी नहीं है तो उन्होंने रिया का साथ नहीं छोड़ा। 10 साल के बाद उनका अपनी बेटी रिया के प्रति प्रेम कम नहीं हुआ।

सुदर्शन प्रियदर्शिनी की कहानी 'आचार–संहिता' एक ऐसे पति नाहर की कहानी है जो भारतीय होकर एक अमरीकी महिला कैथी को अपनी पत्नी बनाता है और साथ ही एक अलिखित आचार–संहिता पर हस्ताक्षर कर देता है। उसमें से एक का जिक्र करते हुए कैथी कहती है कि, "तुम हिनुस्तान नहीं जाओगे और वहां की बीमारिया लाकर अपने बच्चों को नहीं दोगे। प्रिनेप्चुअल एग्रीमेंट के तहत हमारी कोई भी समस्या हो तो घर तुम छोड़ोग, मैं नहीं।..... सगाई की अंगूठी की कीमत कम से कम तुम्हारी वार्षिक आय का दसवां भाग होगा और उस पर बाद में तुम्हारा कोई अधिकार नहीं होगा।"[9] तमाम अनगिनत रोक–टोक और शर्तों के साथ उसका जीवन बीतने लगता है। लेखिका नाहर के स्वाभाव में आए परिवर्तन को चित्रित करते हुए लिखती हैं कि, "नाहर स्वयं को कोसना सीख गया है, वह स्वयं अपने–आप को पहचान नहीं पाता, कितना बदल गया है। उस की सोच और दृष्टी भी कितनी कुंद हो गई है।"[10] परन्तु इस परिस्थति के पीछे नाहर स्वयं जिम्मेदार है। उसने कैथी को शुरुआत से ही अपने सिर पर बिठाकर रखा था। आज वह किसी और को दोष नहीं दे सकता। जब नाहर की माँ अस्पताल में दिल में दर्द के कारण भर्ती हुई उसकी बहन सरिता ने कॉल करके कैथी को बताया परन्तु कैथी ने जानबूझकर नाहर को यह बात नहीं बताई और नाहर का सेल्ल फ़ोन बच्चों के खिलौने में छुपा दीया। लेखिका नाहर की परिस्थति का चित्रण करते हुए लिखती हैं कि, "सरिता सेल्ल फ़ोन करती रही थी। क्योंकि जब सेल्ल फ़ोन मिला....उस में उस की लगभग बीस काल्स थीं और माँ का अस्पताल में चौथा दिन था। उस दिन वह बहुत टूट गया था। उसे लगा वह किसी चट्टान के नीचे दब गया है और सांस नहीं ले पा रहा। स्पष्ट रूप से वह कभी सरिता और माँ को पता नहीं लगने देता था कि ये सब कैथी कर रही है। यूँ बहुत सालों तक तो स्वयं उसे भी कहाँ पता चला था।"[11] एक समय जो कैथी नाहर को पाने के लिए कुछ भी करने को तैयार थी आज वह किस हद तक ओछी और नीच हरकते करने लगी, ये सब वाकई नाहर को अंदर से तोड़ दिया। वह अब अपने पुत्र और भाई होने का फ़र्ज़ निभाने में असमर्थ हो गया था। नाहर की स्थिति एक तरफ कुआँ और एक तरह खाई की तरह हो चुकी थी। वह ना कैथी से लड़ सकता था ना अपनी सास से। लिहाजा वह स्वयं से लड़ने लगा। अंततः उसने हिम्मत जुटाई और एक रात वह कैथी के चंगुल से

निकल गया। "चुपचाप अलिखित आचार–संहिता पर ठोकर मारता अपने बच्चों को लेकर पिछली खिड़की से कभी न लौटने के लिए निकल गया।"[12] नाहर जैसा पति हमेशा परिवारी उलझनों में घिरा रहता है। वह एक लायक पुत्र, भाई, और पिता बनने की हर कोशिश करता है परन्तु उसकी पत्नी नाहर को अपने जकड़न से आज़ाद होने नहीं देती। वह अंततः अपनी पत्नी की जकड़न से मुक्त हो जाता है।

निष्कर्ष

'क़त्ल', 'निमंत्रण', 'फैसला', और आचार–संहिता जैसी और भी कहानियां है जिसमें ऐसे पुरुष पति और अन्य भूमिकाओं में दिखेंगे जो बेबस और लाचार हैं। कुछ पुरुष घर में शान्ति बनाये रखने के कारण सब कुछ सहते रहते हैं और कुछ पुरुष ऐसे भी होते हैं जो सब कुछ छोड़–छाड़ कर घर से भाग जाते हैं या आत्महत्या कर लेते हैं। समाज में बदलाव लाने की आवश्यकता है और उसके लिए यह कारगर होगा कि स्त्री–पुरुष मिलकर एक–दूसरे का साथ देकर समाज में रहें। कोई भी दूसरे के ऊपर अपने खोखले वर्चस्व स्थापित ना करें। समाज में किसी भी व्यक्ति का लिंग के आधार पर शोषण करना गलत है। परन्तु कई ऐसे पुरुष हैं जो घरेलु हिंसा का शिकार हो रहे हैं। एक सभ्य और विकसित समाज के लिए यह चिंता का विषय है। साथ ही साथ अब जरूरी है कि 'पुरुष अध्ययन' भी हो। ताकि जो खोखली रीति–रिवाज रूढ़ हो चुकी है उसे बदला जाए। नए सिरे से समाज में एकरूपता लाने का प्रयास किया जाए। सभी लिंग के लोगों में आपसी लगाव और सबसे महत्वपूर्ण एक दूसरे के प्रति सम्मान हो।

संदर्भ

1. राजन, राजेंद्र (सं), 'प्रगतिशील इरावती', अंक 13, पुरुष विमर्श विशेषांक, अक्तूबर–दिसंबर 2013, पृ. 20
2. वही, पृष्ठ संख्या– 8
3. वही, पृष्ठ संख्या– 91
4. वही, पृष्ठ संख्या– 97
5. वही, पृष्ठ संख्या– 100
6. वही, पृष्ठ संख्या– 100
7. वही, पृष्ठ संख्या– 100
8. वही, पृष्ठ संख्या– 111
9. वही, पृष्ठ संख्या– 101
10. वही, पृष्ठ संख्या– 103
11. वही, पृष्ठ संख्या– 104
12. वही, पृष्ठ संख्या– 105
13. कुमार, संजीव, हिंदी कहानी की इक्कीसवीं सदी, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण, 2022
14. मेरिया, डॉ. संध्या, हिंदी के आंचलिक उपन्यासों में पुरुष, चिंतन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2011
15. कालिया, ममता, दूरस्थ दाम्पत्य, सेतु प्रकाशन, नोएडा, प्रथम संस्करण, 2025
16. Tomassi, Rollo, The Rational Male, Counterflow Media LLC, Nevada, 2013